Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2021 = 7.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, MAY-JUNE, 2021, VOL- 8/65
https://doi.org/10.21922/srjis.v8i65.1348

उच्च शिक्षा में मुस्लिम छात्राओं को आने वाली समस्याओं का अध्ययन

सरिता मेनारिया[१], Ph. D. & रिज़वाना शेख[२]

[१]पर्यवेक्षक (सहायक आचार्य) लोकमान्य तिलक शिक्षक प्रशिक्षण, महाविद्यालय (सी.टी.ई.) डबोक, विश्वविद्यालय) उदयपुर (राजस्थान)

[२]पीएच. डी. शोधार्थी, जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड.टू.बी उदयपुर (राजस्थान)

sheikhriz50@gmail.com

Paper Received On: 21 JUNE 2021

Peer Reviewed On: 30 JUNE 2021

Published On: 1 JULY 2021

Content Originality & Unique: 75%

Abstract

प्रस्तुत शोध उच्च शिक्षा में मुस्लिम छात्राओं को आने वाली समस्याओं का अध्ययन पर केंद्रित है। शोध में स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में अध्ययनरत मुस्लिम छात्राओं की समस्याओं का पता लगाया गया है।

शोध अध्ययन के लिए उदयपुर जिले के २० स्नातक एवं स्नातकोत्तर महाविद्यालयों में अध्ययनरत ६०० मुस्लिम छात्राओं का चयन किया गया है। मुस्लिम छात्राओं को आने वाली समस्याओं का पता लगाने के लिए मुस्लिम छात्रा समस्या अभिमतावली का निर्माण कर उपयोग किया गया। टी-मान सांख्यिकीय तकनीक का उपयोग दत्त विश्लेषण के लिए किया गया।

शोध के परिणाम स्पष्ट करते है कि उच्च शिक्षा के अंतर्गत स्नातक तथा स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में अध्ययनरत मुस्लिम छात्राओं की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षिक समस्याओं में सार्थक अंतर पाया गया। मुस्लिम छात्राओं में सामाजिक समस्याएँ सर्वाधिक तत्पश्चात क्रमशः आर्थिक, शैक्षिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक पहलू संबंधी समस्याएँ पाई गयी है।

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

१.समस्या की पृष्ठ भूमि, औचित्य एवं महत्त्व :-

मनुष्य का सर्वतोमुखी उत्थान शिक्षा का उद्धेश्य है। शिक्षा निदेशालय में सबसे पहले शिक्षा के संख्यात्मक विकास के लिए अनेक योजनाएं बनाई। शिक्षा के प्रचार-प्रसार हेतु छात्र-छात्राओं को सुविधाएं देने की घोषणाएं की गई। ग्रामीण क्षेत्रों में शालाएँ खोली गई। लड़कियों को शिक्षा की ओर आकर्षित करने के लिए अलग से विद्यालय एवं महाविद्यालय खोले गए। ''सब व्यक्तियों की शिक्षा'' अथवा जनसाधारण की शिक्षा ही राष्ट्रीय प्रगति का मूलाधार है। इसका उत्थान करके ही हमारे देश कल्याण हो सकता है। मानवाधिकार घोषणा के अनुसार शिक्षा सबका अधिकार है। प्रारम्भिक शिक्षा निःशुल्क और अनिवार्य होगी। प्रौद्योगिक एवं व्यवसाय संबंधी शिक्षा सामान्यतः सबको उपलब्ध होगी और योग्यता के

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

अनुसार उच्च शिक्षा भी उपलब्ध होगी। किसी भी राष्ट्र के पूर्ण रूप से विकसित होने के लिए वहां की आधी आबादी अर्थात महिलाओं का शिक्षित होना बहुत आवश्यक है। नारी का शिक्षित होना इसलिए भी आवश्यक है कि मनुष्य जीवन की सफलता और असफलता का बहुत कुछ श्रेय नारी की शिक्षा-दीक्षा और विवेक शक्ति को ही है। हालांकि अगर हम पौराणिक काल से लेकर आजादी के बाद के समय की बात करें तो महिला शिक्षा को लेकर बहुत जागरूकता आ चुकी है। महिला शिक्षा से संबंधित साक्षरता अभियानों में प्रगति हुई है परंतु अभी भी यह कार्य संतुष्टि के स्तर पर नहीं पहुंचा अभी भी इस दिशा में काम करना बाकी है।

शिक्षा वर्तमान की आवश्यकता है लेकिन मुस्लिम समाज के लोगों की शिक्षा के प्रति रुचि बहुत कम हैं। समाज के पांच प्रतिशत लोग ही उच्च शिक्षित है। यह समाज और राष्ट्र के लिए चिंता का विषय है। देश के अल्पसंख्यक मुसलमान समुदाय की विशेषकर मुस्लिम महिलाएं पिछड़ा हुआ जीवन व्यतीत करने पर अभिशप्त है। अशिक्षा, गरीबी, बेरोजगारी, अधिकारों के प्रति अनभिज्ञता होने के कारण मुस्लिम समाज की १४.६ प्रतिशत मुस्लिम आबादी, कुल मुस्लिम आबादी २७ जनवरी २०११ की जनगणना के आधार पर, शैक्षिक, आर्थिक एवं सामाजिक रूप से अत्यंत पिछड़ी हुई है।

कुरान एवं हदीस को देखें तो मालूम होता है कि इस्लाम में सामाजिक, आर्थिक, नागरिक, कानूनी एवं पारिवारिक मामलों में जितने अधिकार महिलाओं को दिए हैं उतने लिखित रूप में किसी भी धर्म में नहीं दिए गये। इन सब के बावजूद आज मुस्लिम महिलाओं को पिछड़ेपन, अशिक्षा, पारिवारिक एवं सामाजिक प्रताड़ना जैसे चौतरफा दबाव झेलने पड़ते हैं। इस्लाम में मुस्लिम छात्राओं को शिक्षा के अवसर मदरसे के द्वारा उपलब्ध करवाए जाते हैं जिसमें मौलवियों का विशेष योगदान रहता है। छात्राएँ पर्दा प्रथा के कारण बुर्का इत्यादि पहनती है लेकिन वर्तमान महाविद्यालयों में एक ड्रेस कोड होता है जिसे पहनने में मुस्लिम छात्राएँ हिचकिचाहट का अनुभव करती है। वर्तमान महाविद्यालयों की मान्यताओं एवं संस्कृति को स्वीकार नहीं कर पाती है। इस कारण मुस्लिम छात्राएँ उच्च शिक्षा से वंचित हो रही है। उच्च शिक्षा से वंचित होने का एक कारण किशोरावस्था में ही होने वाला निकाह है जिसके कारण उच्च शिक्षा की स्थिति आते-आते छात्राएँ पारिवारिक दायित्व निर्वहन करने के लिए मजबूर हो जाती है। मुस्लिम छात्राओं को शिक्षा के उच्च स्तर तक पहुँचना एक प्रकार का सपना हो जाता है।

इस्लाम में महिलाओं को उच्च शिक्षा ग्रहण करने और आवश्यकता पड़ने पर घर की चारदीवारी से बाहर निकल कर रोजगार करने में कोई मनाही नहीं है, पर इनके लिए शरई, इस्लामी, कानून बनाए गए जिनका पालन करना अत्यंत आवश्यक है। सर सैययद अहमद खाँ का मानना था कि आला तालीम अक्ल जहन के बन्द दरावाजे खोल देती है। उच्च शिक्षा के बिना भविष्य में जिदंगी की किसी भी चुनौती को पूरा नहीं किया जा सकता।

सरकार द्वारा अनेक योजनाएँ चलाने के बावजूद अभी गांवों में शिक्षा का पूर्ण प्रसार नहीं हो पाया है। विशेष तौर पर मुस्लिम बालिका उच्च शिक्षा की स्थितियों में सुधार की आवश्यकता है।

शिक्षा के क्षेत्र में मुस्लिम वर्ग की छात्राएं पिछड़ी हुई क्यों है? उच्च शिक्षा में प्रवेश लेने से पहले ही मुस्लिम छात्राएं पढ़ाई क्यों छोड़ देती है? कुल अशिक्षितों में अधिकतर महिलायें मुस्लिम क्यों हैं? किस कारण वो शिक्षा ग्रहण नहीं कर

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

पा रहे है? इन प्रश्नों के उत्तर जानने के लिए शोधार्थी ने उच्च शिक्षा में मुस्लिम छात्राओं की समस्याओं को जानने का प्रयास किया।

२.शोध शीर्षक :-

उच्च शिक्षा में मुस्लिम छात्राओं को आने वाली समस्याओं का अध्ययन।

३.शोध के उद्देश्य :-

स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में अध्ययनरत मुस्लिम छात्राओं को आने वाली समस्याओं का अध्ययन करना।

४. समस्या का परिभाषीकरण :-

१. **मुस्लिम छात्रा** :- प्रस्तुत शोध में मुस्लिम छात्राओं से तात्पर्य स्नातक एवं स्नातकोत्तर महाविद्यालयों मे पढ़ने वाली मुस्लिम परिवारों की वह लड़कियाँ जो शिक्षा प्राप्त कर रहीं है।

२. **समस्याएँ** :- प्रस्तुत शोध मे समस्याओं से तात्पर्य उन कठिनाईयों से है जो मुस्लिम छात्राओं को अध्ययन के दौरान उपस्थित होती है। ये समस्याएँ छात्राओं के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक एवं धार्मिक पहलुओं से शिक्षा में आती है तथा नामांकन तथा ठहराव के साथ शिक्षा के स्तर को प्रभावित करने का कार्य करती है।

५. परिसीमन :-

शोध कार्य को उदयपुर जिले के २० स्नातक एवं स्नातकोत्तर महाविद्यालयों में अध्ययनरत मुस्लिम छात्राओं तक ही सीमित रखा गया है।

६. न्यादर्श :-

न्यादर्श का चयन यादृच्छिक प्रतिचयन विधि से किया गया है। न्यादर्श के रूप में उदयपुर जिले के २० स्नातक एवं स्नातकोत्तर महाविद्यालय में अध्ययनरत ६०० मुस्लिम छात्राओं का जिसमें ३०० स्नातक स्तर की मुस्लिम छात्राएँ एवं ३०० स्नातकोत्तर स्तर की मुस्लिम छात्राओं का चयन किया गया है।

७. विधि :-

प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया।

८. उपकरण :-

मुस्लिम छात्राओं को आने वाली समस्याओं का अध्ययन करने के लिए स्वनिर्मित मुस्लिम छात्रा समस्या अभिमतावली का उपयोग किया गया है।

९. सांख्यिकीय तकनीक :-

शोध कार्य में दत्त विश्लेषण के लिए मध्यमान, मानक विचलन एवं टी-मान सांख्यिकीय तकनीक को उपयोग में लिया गया।

१०.परिकल्पना :-

१. स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में अध्ययनरत मुस्लिम छात्राओं को आने वाली समस्याओं में कोई सार्थक अंतर नहीं हैं।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

११. दत्त विश्लेषण :-

१. स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में अध्ययनरत मुस्लिम छात्राओं को आने वाली समस्याआ का तुलनात्मक अध्ययन :-

सारणी संख्या-१

स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में अध्ययनरत मुस्लिम छात्राओं की समस्याओं का मध्यमान, मानक विचलन तथा टी-मान के आधार पर क्षेत्रवार विश्लेषण

क्र. सं.	क्षेत्र	स्नातक महाविद्यालय छ,त्र३००		स्नातकोत्तर महाविद्यालय छ,त्र३००		मध्य मान अन्तर क ध्ज्जम ,	अन्तर की मानक त्रुटि σक ध्म्क,	कि	टी-मान	सार्थकता अन्तर
		मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन					
१	सामाजिक पहलू	२२.२५	३.१६	२१.३५	३.०७	०.६०	०.२५६	५६८	३.५१	S
२	आर्थिक पहलू	२१.८६	३.०३	२१.३२	३.२६	०.५८	०.२५६	५६८	२.२३	S
३	सांस्कृतिक पहलू	१८.६८	३.४४	१८.२	३.६२	०.७६	०.३०२	५६८	२.६१	S
४	शैक्षिक पहलू	२१.७५	३.४७	२०.१५	३.१६	१.६०	०.२७१	५६८	५.६१	S
५	धार्मिक पहलू	२१.५५	३.७३	१६.३४	३.६२	२.२१	०.३१३	५६८	७.०७	S
समग्र		१०६.४४	१६.८८	१००.३६	१७.३८	६.०८	१.३६६	५६८	४.३४	S

S = सार्थक अन्तर,

NS = सार्थक अन्तर नहीं

व्याख्या -

सारणी-१ के विश्लेषण के अनुसार समस्त क्षेत्रों के आधार पर स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में अध्ययनरत मुस्लिम छात्राओं की समस्याओं के प्राप्तांकों का समग्र टी-मान ४.३४ सारणी के टी-मान (.०५ स्तर पर १.९६ तथा .०१ स्तर पर २.५८) से अधिक है। जिससे यह स्पष्ट होता है कि स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में अध्ययनरत मुस्लिम छात्राओं की समस्याओं में सार्थक अन्तर पाया गया।

जिसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में अध्ययनरत मुस्लिम छात्राओं की समस्याओं में असमानता पायी गयी है। आरेख में मुस्लिम छात्राओं की समस्याओं को तुलनात्मक रूप से दर्शाया गया है। अतः परिकल्पना संख्या-१ ''स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में अध्ययनरत मुस्लिम छात्राओं को आने वाली समस्याओं में कोई सार्थक अंतर नहीं हैं।'' अस्वीकार की जाती है।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

१. **प्रथम क्षेत्र : सामाजिक पहलू :-**

स्नातक तथा स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में अध्ययनरत मुस्लिम छात्राओं की समस्याओं के प्रथम क्षेत्र 'सामाजिक पहलू' के प्रति प्राप्त आंकड़ों का टी-मान ३.५१ सारणी के टी-मान .०१ स्तर पर २.५८ से अधिक है। जिसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में अध्ययनरत मुस्लिम छात्राओं की सामाजिक समस्याओं में सार्थक अन्तर पाया गया। इससे निष्कर्ष पाप्त होता है कि मुस्लिम छात्राओं की समस्याओं के प्रथम क्षेत्र 'सामाजिक पहलू' में स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर असमानता पायी गयी है। मुस्लिम महिलाओं की उच्च शिक्षा में बाधाएं लाने के लिए अधिकतर सामाजिक वर्जनाएं, पूर्वाग्रह और परंपराएं, जल्द विवाह का चलन, पर्दा प्रथा, शैक्षिक सहायता और सुविधाओं का अभाव एवं जागरूकता और चेतना की कमी संबंधी सामाजिक समस्याओं में स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर मुस्लिम छात्राओं के मध्य सार्थक अन्तर हैं।

२. **द्वितीय क्षेत्र : आर्थिक पहलू :-**

मुस्लिम छात्राओं की समस्याओं के द्वितीय क्षेत्र 'आर्थिक पहलू' के प्रति स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर प्राप्त दत्तों का टी-मान २.२३ सारणी के टी-मान .०५ स्तर पर १.९६ से अधिक तथा .०१ स्तर पर २.५८ से कम प्राप्त हुआ है। टी-मान से यह स्पष्ट होता है कि स्नातक तथा स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में अध्ययनरत मुस्लिम छात्राओं की आर्थिक समस्याओं में .०५ स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया। इससे निष्कर्ष स्वरूप मुस्लिम छात्राओं की समस्याओं के द्वितीय क्षेत्र 'आर्थिक पहलू' में स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर असमानता प्राप्त हुई है। माता-पिता की निम्न आय, गरीबी, उच्च शिक्षा का अधिक खर्च एवं शिक्षित मुस्लिम महिलाओं में बेरोजगारी संबंधी आर्थिक समस्याओं में स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर मुस्लिम छात्राओं में सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ हैं।

३. **तृतीय क्षेत्र : सांस्कृतिक पहलू :-**

स्नातक-स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में अध्ययनरत मुस्लिम छात्राओं की समस्याओं के तृतीय क्षेत्र 'सांस्कृतिक पहलू' के प्रति मध्यमान एवं मानक विचलन के आधार पर प्राप्त दत्तों का टी-मान २.६१ सारणी के टी-मान .०५ स्तर पर १.९६ एवं .०१ स्तर पर २.५८ से अधिक आया है। जिससे यह स्पष्ट है कि स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में अध्ययनरत मुस्लिम छात्राओं की सांस्कृतिक समस्याओं में सार्थक अन्तर पाया गया। इससे निष्कर्ष निकलता है कि मुस्लिम छात्राओं की समस्याओं के तृतीय क्षेत्र 'सांस्कृतिक पहलू' में स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर असमानता पायी गयी है। मुस्लिम छात्राओं में तथाकथित सांस्कृतिक प्रतिबंध, सांस्कृतिक वर्जनाएँ, सामाजिक-सांस्कृतिक परंपराएँ, सांस्कृतिक रूढ़िवादिता, मान्यताएं, रीति-रिवाज, दहेज प्रथा एवं पूर्वाग्रह संबंधी सांस्कृतिक समस्याओं में स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर मुस्लिम छात्राओं में सार्थक अन्तर हैं।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

४. **चतुर्थ क्षेत्र : शैक्षिक पहलू :-**

स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में अध्ययनरत मुस्लिम छात्राओं की समस्याओं के चतुर्थ क्षेत्र 'शैक्षिक पहलू' के प्रति दत्तों का टी-मान ५.६१ सारणी के टी-मान .०५ तथा .०१ दोनो स्तरों पर अधिक पाया गया है। टी-मान से यह स्पष्ट है कि स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में अध्ययनरत मुस्लिम छात्राओं की शैक्षिक समस्याओं में सार्थक अन्तर पाया गया। परिणाम स्वरूप मुस्लिम छात्राओं की समस्याओं के चतुर्थ क्षेत्र 'शैक्षिक पहलू' में स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर असमानता प्राप्त हुई है। मुस्लिम परिवारों में शैक्षिक वातावरण का अभाव, माता-पिता की शैक्षिक महत्वाकांक्षाओं का कम होना, महिलाओं की उच्च शिक्षा पर कम महत्व देना एवं जागरूकता की कमी संबंधी शैक्षिक समस्याओं में स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर मुस्लिम छात्राओं में सार्थक अन्तर हैं।

५. **पंचम क्षेत्र : धार्मिक पहलू :-**

स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में अध्ययनरत मुस्लिम छात्राओं की समस्याओं के पंचम क्षेत्र 'धार्मिक पहलू' में प्राप्त दत्तों का टी-मान ७.०७ सारणी के टी-मान .०५ स्तर पर १.९६ तथा .०१ स्तर पर २.५८ से अधिक है। इस आधार पर स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में अध्ययनरत मुस्लिम छात्राओं की धार्मिक समस्याओं में सार्थक अन्तर है। निष्कर्ष फलस्वरूप मुस्लिम छात्राओं की समस्याओं के पंचम क्षेत्र 'धार्मिक पहलू' में स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर असमानता प्राप्त हुई है। धार्मिक मूल्यों और इस्लामी पहचान को खोने का डर, माता-पिता की असहजता, धार्मिक निर्देशों की पारंपरिक गलत व्याख्या, अज्ञानता और रूढ़िवादीता संबंधी धार्मिक समस्याओं में स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर मुस्लिम छात्राओं में सार्थक अन्तर पाया गया है।

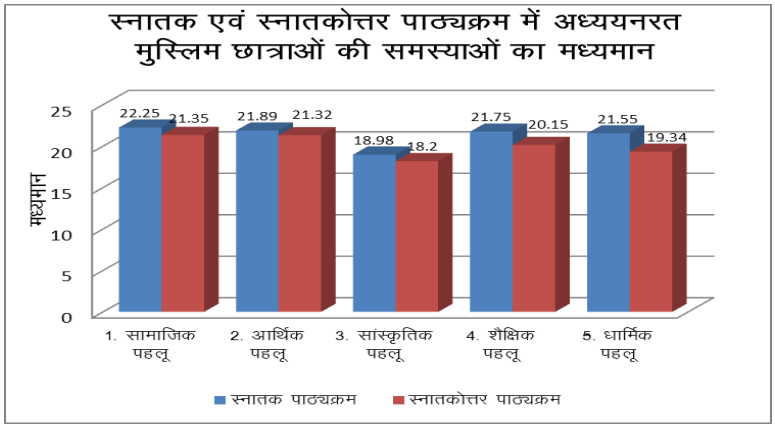

१२. निष्कर्ष :-

- **मुस्लिम छात्राओं की समस्याओं का तुलनात्मक निष्कर्ष :-**

स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में अध्ययनरत मुस्लिम छात्राओं की समस्याओं में समग्र क्षेत्रों के आधार पर सार्थक अन्तर पाया गया। दोनो समूहों की समस्याओं में असमानता पायी गयी है। इस कारण परिकल्पना

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

''स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में अध्ययनरत मुस्लिम छात्राओं को आने वाली समस्याओं में कोई सार्थक अंतर नहीं हैं।'' अस्वीकार की गई है।

- सामाजिक पहलू के प्रति स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर असमानता पायी गयी है। मुस्लिम छात्राओं की उच्च शिक्षा में बाधाओं के लिए सामाजिक वर्जनाएं, पूर्वाग्रह, परंपराएं, जल्द विवाह, पर्दा प्रथा, शैक्षिक सहायता की कमी एवं जागरूकता का अभाव संबंधी सामाजिक समस्याओं में स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर मुस्लिम छात्राओं के दोनो समूहों के मध्य सार्थक अन्तर पाया गया।
- आर्थिक पहलू में स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर मुस्लिम छात्राओं असमानता प्राप्त हुई है। अभिभावकों की कम आय, गरीबी, उच्च शिक्षा का खर्च अधिक होना एवं शिक्षित मुस्लिम महिलाओं में बेरोजगारी संबंधी आर्थिक समस्याओं में स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर मुस्लिम छात्राओं में सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ हैं।
- स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में अध्ययनरत मुस्लिम छात्राओं में तथाकथित सांस्कृतिक प्रतिबंध, सामाजिक-सांस्कृतिक परंपराएँ, सांस्कृतिक रूढ़िवादिता, मान्यताएं, रीति-रिवाज, दहेज प्रथा एवं पूर्वाग्रह संबंधी सांस्कृतिक समस्याओं में सार्थक अन्तर हैं।
- स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में अध्ययनरत मुस्लिम छात्राओं की शैक्षिक समस्याओं के प्रति असमानता प्राप्त हुई है। मुस्लिम समाज में शैक्षिक वातावरण का अभाव, अभिभावकों की शैक्षिक महत्वाकांक्षाओं का न्यून होना, महिलाओं की उच्च शिक्षा के प्रति जागरूकता की कमी संबंधी शैक्षिक समस्याओं में मुस्लिम छात्राओं के स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया।
- मुस्लिम छात्राओं की स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर धार्मिक समस्याओं में असमानता है। धार्मिक मूल्यों और इस्लामी पहचान को खोने का डर, धार्मिक निर्देशों की अतार्किक व्याख्या, अभिभावकों की असहजता, रूढ़िवादीता और अज्ञानता संबंधी धार्मिक समस्याओं में स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर मुस्लिम छात्राओं में सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ है।

१३. शैक्षिक निहितार्थ :-

उच्च शिक्षा के अंतर्गत स्नातक तथा स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में अध्ययनरत मुस्लिम छात्राओं की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षिक समस्याओं में सार्थक अंतर पाया गया।

स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में अध्ययनरत मुस्लिम छात्राओं में सामाजिक समस्याएँ सर्वाधिक तत्पश्चात क्रमशः आर्थिक, शैक्षिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक पहलू संबंधी समस्याएँ पाई गयी है।

उच्च शिक्षा में मुस्लिम छात्राओं की समस्याओं के समाधान हेतु सामाजिक- सांस्कृतिक वर्जनाओं के व्यवहारिक चिंतन में बदलाव, रूचिप्रद गतिविधियों में मुस्लिम छात्राओं की सहभागिता एवं अभिभावक-अध्यापक मिटिंग का मासिक आयोजन आवश्यक है। समस्याओं के समाधान हेतु मुस्लिम छात्राओं का सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक एवं

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

धार्मिक सशक्तिकरण, सामाजिक और सांस्कृतिक वर्जनाओं की सोच में आधुनिकता, उच्च शिक्षा के लिए मुस्लिम छात्राओं को छात्रवृत्तियाँ या वित्तिय सहायता, मुस्लिम परिवारों में जागरूकता अभियान एवं धार्मिक आदर्शवाद का अवबोधात्मक विकास जरूरी है।

मुस्लिम अभिभावकों को चाहिए की वो अपनी बालिकाओं को उच्च शिक्षा दिलाने के प्रति अग्रसर रहें जिससे बालिका शिक्षा को बढ़ावा मिलेगा तथा उनका शैक्षिक स्तर ऊँचा हो पायेगा। प्रस्तुत शोध कार्य मुस्लिम अभिभावकों एवं छात्राओं के लिए एक मार्ग प्रस्तुत करता है जिससे वो अपनी शैक्षिक समस्याओं को दूर कर सकेंगे।

प्रस्तुत शोध से उच्च शिक्षा में मुस्लिम छात्राओं के उच्च शिक्षा के संदर्भ में अनुभूत की जाने वाली समस्याओं की जानकारी प्राप्त होती है।

१४. संदर्भ सूची

अग्रवाल, जे.सी. (१९८९) : ***भारत में शिक्षा : नीतियां, कार्यक्रम और विकास,*** *दोआबा हाउस बुक सेलर्स एंड पब्लिशर्स, दिल्ली।*

अब्दुल्ला (१९९७) : ***मुस्लिम महिलाओं का शैक्षिक पिछड़ापन,*** *सर्वेक्षण, हमदर्द एजुकेशनल सोसायटी, नई दिल्ली।*

अशोककुमार (१९९३) : ***समकालीन भारतीय समाज में महिलाएँ,*** *वहल्यूम ११, अहक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली।*

असगर अली इंजीनियर, (१९९५) : ***भारत में मुस्लिम महिलाओं की समस्याएं,*** *ओरिएंट लहन्गामैन लिमिटेड, बहम्बे।*

अहमद इमित्याज (२००४) : ***मध्यकालीन मुस्लिम भारत का इतिहास*** *(८ वीं से १८ वीं शताब्दी तक एक सर्वेक्षण) नेशनल पब्लिकेशन, पटना।*

एयरन, जे.डब्ल्यू. (१९६७) : ***भारत में कहलेज शिक्षा, योजना आयोग,*** *भारत सरकार, नई दिल्ली।*

कपिल एच. के. (२००८) : ***सांख्यिकी के मूल तत्व,*** *विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।*

गीता कुमारी (२०१६) : ***मुस्लिम परिवरों में परिवर्तित दृष्टिकोण का अध्ययन,*** *स्टर्लिंग पब्लिशर्स, नई दिल्ली।*

ढोढियाल,एस. एवं फाटक, ए.बी. (२००३) : ***शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र,*** *राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर*

देसाई ज़िया-उद-दीन ए. देसाई (१९७८) : ***भारत में इस्लामी शिक्षा के केंद्र,*** *निदेशक, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार।*

नंदिता अग्रवाल (१९९३) : ***भारत में महिला शिक्षा और जनसंख्या,*** *सेज पब्लिकेशन, नई दिल्ली।*

फजल शाहनवाज (२०१३) : ***शिक्षा मुस्लिम महिलाओं की प्रगति का मार्ग,*** *न्यूज़ भारतीय हिंदी।*

मलिक राम बवेजा (१९९२) : ***वूमन इन इस्लाम,*** *अलाइड पब्लिशर्स, नई दिल्ली।*

राजमल, देवदास (१९७९) : ***उच्च शिक्षा पर महिलाओं के लिए आयोग की रिपोर्ट, मोनोग्राफ*** *-१७, मद्रास विश्वविद्यालय, मद्रास।*

शिबानी रहय (१९७९) : ***उत्तर भारत में मुस्लिम महिलाओं की स्थिति,*** *बी.आर. प्रकाशन निगम, दिल्ली।*

सुखिया, एस.पी.सी. एवं मेहरोत्रा आर.एन. (१९८४) : ***शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्त्व,*** *विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।*

सेख रहीम मोंडल (१९९७) : ***मुसलमानों की शैक्षिक स्थितिः समस्याएं संभावनाएँ और प्राथमिकताएँ,*** *अंतर-भारत प्रकाशन, नई दिल्ली।*

हुसैन, एस.एस. और अशरफ, एस.ए. (१९७९) : ***मुस्लिम एजुकेशन में संकट,*** *इस्लामी शिक्षा सीरीज़, होडर एंड स्टफटन, किंग अब्दुलअज़ीज़ यूनिवर्सिटी, जेद्दा।*

कोश

एल. ई.सी. एवं सी.डी. धन (१९८३) : ***इनसाइक्लोपीडिया ऑफ एजुकेशन,*** *रिसर्च भाग।*

शर्मा, के.के. तथा अन्य (२००५). ***शिक्षा शब्दकोष,*** *स्वाति पब्लिकेशन्स, जयपुर।*

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

वेबसाइट

https://hi.wikipedia.org/s/5y5
www.google.com
http://www.mondofacodictionary.org/definetion

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies